अश्विनौ वा अकामयेताम्। श्रोत्रस्विनावबधिरौ स्यावेति। तावेतमश्विभ्यामश्वयुग्भ्यां पुरोडाशं द्विकपालं निरवपताम्। ततो वै तौ श्रोत्रस्विनावबधिराव-भवताम्। श्रोत्रस्वी ह वा अबधिरो भवति। य एतेन हविषा यजते। यउचैनदेवं वेद। सोऽच जुहोति। अश्विभ्याꣳ स्वाहाऽश्वयुग्भ्याꣳ स्वाहा। श्रोत्राय स्वाहा श्रुत्यै स्वाहेति॥ १३॥

यमो वा अकामयत। पितॄणाꣳ राज्यमभिजयेयमिति। स एतं यमायापभरणीभ्यश्चरुं निरवपत्। ततो वै स पितॄणाꣳ राज्यमभ्यजयत्। समानानाꣳ ह वै राज्यमभिजयति। य एतेन हविषा यजते। यउचैनदेवं वेद। सोऽच जुहोति। यमाय स्वाहापभरणीभ्यः स्वाहा। राज्याय स्वाहाभिजित्यै स्वाहेति॥ १४॥

अथैतदमावास्याया आज्यं निर्वपति। कामो वा-अमावास्या। काम आज्यम्। कामेनैव कामꣳ समर्द्धयति। क्षिप्रमेनꣳ सकाम उपनमति। येन कामेन यजते। सोऽच जुहोति। अमावास्यायै स्वाहा कामाय स्वाहा गत्यै स्वाहेति॥ १५॥